Un poema de Shirish Maurya

traducido por Manju Yadav

नींद में

नींद में मुझे सुनाई दी एक आवाज़
मुझसे किसी ने कहा – उठो
मैं पूछने लगा
कहां से उठूं
नींद से उठूं
कि सपने से उठूं
जहां बैठा हूं उठूं वहां से
उठ कर क्या करूं
कोई नहीं बताता
उठूं तो कैसे उठूं
कंठ में प्यास की तरह उठूं
आंख में किरकिरी की तरह
या एकदम उठ जाऊं
एक असम्भव बारिश में नदियों के पानी की तरह
घरों में घुस जाऊं
किस की तरह उठूं
बिल्ली की तरह चपल उठूं
चुपचाप
और हो रही सुबह का शिकार कर लूं
नभ हो जाए कुछ और लाल
या आदमी की तरह ही उठूं ऊंघता हुआ
बैठ जाऊं
कि मुझसे फिर कहा जाए –उठो
एक ख़्वाब है कविता में
मीर की तरह उस गली से उस तरह उठूं
जिसे
जिस तरह उन्होंने
'जैसे कोई जहां से उठता है'
कहा था
नींद को कविता में बदल दूं
मुझसे कोई कहे उठो
तो नींद से नहीं कविता से उठूं
उठकर कहीं चला जाऊं बिना बताए
बिना कोई निशान छोड़े
मुझे कोई न खोजे
दुनिया में नींद और कविता से भी बड़ी चीज़ें हैं
ज्यादातर बड़ी ही चीज़ें हैं.

"यूँ उठे आह उस गली से हम
जैसे कोई जहाँ से उठता है" - मीर

En el sueño

En mi sueño escuché un sonido
Alguien me dijo – levántate
Le pregunté,
De dónde -
de dormir
O soñar
Levantarme de donde estoy sentado
Lo que hago si me levanto
Nadie lo cuenta
Cómo levantarme-
Como la sed en el cuello
Como la arena de los ojos
O de inmediato
Como el agua del río
De una lluvia incesable
Entro en las casas.
Cómo levantarme-
levantarme bruscamente como un gato
y cazo la madrugada en silencio
y el cielo se volverá más rojo
o levantarme como un humano somnoliento
sentarme de nuevo
Pues me dirán otra vez – levántate.
Hay un sueño, en poema
levantarme en esa calle como Mir-
como
en la forma en que
"cómo alguien deja al mundo"
Él dijo,
Convierte el sueño en poema
Si alguien me pide que me levante
Me despierta del poema, no del
sueño
Saldré a algún sitio sin contar
sin dejar marcas
nadie me encuentre
Hay cosas más grandes que sueño y poema
la mayoría de las cosas son grandes.

"Yun uthe aah us gali se ham
Jaise koi jahan se uthata hai" - Mir